माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

वर्ष-2022
24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड			परीक्षा का माध्यम
फसल उत्पादन एवं बागवानी	4	2	0	हिन्दी

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक – 321 – 1520695

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

2	2	4	3	3	4	5	5	7

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL
माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल.माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल.माध्यमिकशिक्षामण्डल,म.प्र.,भोपाल

नीचे दिये गये उदाहरण अनुसार रोल नम्बर भरें।

उदाहरणार्थ	1	1	2	4	3	9	5	6	8
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

क – पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंको में X शब्दों में X

ख – परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 03

ग – परीक्षा की दिनांक 09 03 2022

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हायर सेकन्डरी परीक्षा
केन्द्राध्यक्ष
केन्द्र क्र. 432077

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
RAJU SORTHA	[signature]

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तनुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया अन्दर के पृष्ठों के अनुरुप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी अंकों का योग सही है।
निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदाकिंत संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
Smt. I. V. Lilhore (Lect.) V. No. 106 Govt. Exce. BETUL	Parina ... V.N... G.H.S.S.

नोट :– "हायर सेकेन्डरी परीक्षा में केवल वाणिज्य संकाय के ... में प्रायोगिक विषय को छोड़कर शेष विषयों हेतु नियमित एवं स्वाध्यायी ... पत्र 100 अंकों का होगा किन्तु नियमित छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक का 80% अधिभार ... स्वाध्यायी छात्रों को 100 अंक के प्राप्तांक ही अंकसूची में प्रदर्शित किये जायेंगे।"

केवल परीक्षक द्वारा भरा जायें
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंको में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

प्राप्तांक शब्दों ... अंकों में

विशेष नोट :– सिलाई खुली हुई अथवा क्षतिग्रस्त उत्तर पुस्तिका को न तो पर्यवेक्षक वितरण करे और न ही छात्र उपयोग में ले। ऐसी उत्तर पुस्तिका में लिखें उत्तरों का मूल्यांकन नहीं किया जायेगा।

परीक्षार्थी द्वारा भरा जायें →
केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जायें →
परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जायें →

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARY

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (1) के उत्तर

(I) (B) 46

(II) (B) खरपतवार में

(III) (C) गन्ने का

(IV) (C) टोड स्टूल

(V) (D) चना की

MPBSE

प्रश्न क्र. (2) के उत्तर

(i) 2 (नाइट्रोजन व फॉस्फोरस)

(ii) वायरस

(iii) नई दिल्ली

(iv) 30-38

(v) तीन (दो-तीन)

( ) वाइटेसी (विटेसी)

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. ③ का उत्तर

A कॉलम		B कॉलम
(I) लेट ब्लाइट	—	B. आलू की फसल
(II) मशरूम	—	A. शाकाहारी मीट
(III) धूसा वेदाना	—	D. अंगूर की किस्म
सफेद मूसली	—	C. क्लोरोफाइटम बोरीविलिएनम
…क गार्डन	—	E. चंडीगढ़

प्रश्न क्र. ④ के उत्तर

(i) ग्रीष्म (गर्मी) के मौसम के फूल वाले पौधे हैं।

(ii) मॉस गलाने एवं उन सिकुड़ने के लिए 'पपेन' का उपयोग करते हैं

(iii) रबी (शरद) की ऋतु की फसल हैं।

(iv) पत्ती भाग से तेल निकाला जाता हैं।

(v) २ (दो) विधियाँ हैं —(1) अस्थायी (अल्पकालीन परीक्षण), (2) स्थायी (दीर्घकालीन परिरक्षण)

(vi) चूने के घोल से उपचारित करते हैं।

M P B S E

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (5) के उत्तर

(i) सत्य

(ii) असत्य

(iii) असत्य

(iv) सत्य

(v) सत्य

(vi) सत्य

MPBSE

प्रश्न क्र. (6) का उत्तर

सिंचाई एवं जलनिकास में अन्तर निम्न हैं :-

क्र.	सिंचाई	जल-निकास
1)	सिंचाई खेत में पानी देने की विधि है।	जल निकास खेत से पानी बाहर निकालने की विधि है।
2)	सिंचाई से भूमि का जल-स्तर बढ़ता है।	जल-निकास से भूमि का जल-स्तर घटता है।
3)	सिंचाई का जल अन्य घरेलू उपयोग में लिया जा सकता है।	जल-निकास से ग्राम जल घरेलू उपयोग में नहीं लिया जा सकता

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (7) का उत्तर 'अथवा'

जल निकास के लाभ निम्न हैं :-

1) जल निकास से समुचित वायु संचार भूमि में होता हैं, जिसे बीजों का अंकुरण व जड़ों का विकास अच्छा होता हैं।

2) जल निकास से ~~आने वाली~~ अगली बोयी जाने वाली फसल की तैयारी, जुताई, बुआई आदि कार्य समय पर ... जा सकते हैं।

प्रश्न क्र. (8) का उत्तर 'अथवा'

दो नाइट्रोजन धारी / नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों के नाम निम्न हैं-

1) यूरिया :- नाइट्रोजन 46 %

... अमोनियम ~~सल्फेट~~ सल्फेट :- नाइट्रोजन - 20.6 %

... कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट - (काला) :- नाइट्रोजन 20.5 %

(सफेद) :- नाइट्रोजन 25 %

प्रश्न क्र. (9) का उत्तर

खरपतवारों की विशेषताएँ :-

... इनके बीजों का अंकुरण शीघ्र होता हैं। जल्दी पकते हैं। ... ये प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उग सकते हैं। दोषपूर्ण ... भूमि में भी वृद्धि कर सकते हैं।

M
P
B
S
E

MPBSE

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (10) का उत्तर

गन्ने की दो उन्नत किस्में :

1) C.O-449   2) C.O-997

प्रश्न क्र. (11) का उत्तर

अथवा

अंगूर की दो बीज रहित जातियाँ निम्न हैं :

1) थॉमसन सीडलेस

...यूटी बेदाना

प्रश्न क्र. (12) का उत्तर

आम का प्रसारण निम्न विधियों से करते हैं :

1) इनार्चिंग :

आम के पौधे को गमले में उगाकर 20-25 cm ऊपर से 4-5 cm का कटान तेज चाकू से इस प्रकार लगाते हैं कि छाल के साथ लकड़ी का कुछ भाग भी कट जाए। इसी प्रकार का कटान समान मोटाई वाली शाखा (Scion) पर पितृवृक्ष पर लगाते हैं। फिर दोनों गमले सहित मूलवृन्त को पितृवृक्ष की शाखा (Scion) के पास लेजाकर दोनों कटानों को मिलाकर कसकर बाँध देते हैं। 2-3 महिने में शाखा

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

जुड़ जाती है।

2) ग्राफ्टिंग :-

ग्राफ्टिंग जैसे-विनीयर ग्राफ्टिंग द्वारा भी आम का प्रसारण किया जाता है।

बीज द्वारा :-

बीज द्वारा आम को उगाते हैं। 75-100 cm ब्रे. का होने पर भूमि में लगा देते हैं।

MPBSE

प्रश्न क्र. (13) का उत्तर

ब्लान्चिंग :-

फलों एवं सब्जियों को 100°C ताप वाले जल (उबलते जल) में 2 से 5 मिनट तक रखना 'ब्लांचिंग' कहलाता है।

ब्लांचिंग का उद्देश्य फलों को मुलायम करना है।

प्रश्न क्र. ~~15~~ (15) का उत्तर

हरीखाद के लाभ :-

(1) इससे मृदा को सभी पोषक-तत्व प्राप्त हो जाते हैं।

(2) हरीखाद की फसल शीघ्र तैयार होने से वर्ष में कई फसलें ली जा सकती हैं।

(3) इससे पर्यावरण प्रदूषित नहीं होता है। मृदा की उर्वरता बनी रही रहती है।

मध्यप्रदेश
MPBSE

प्रश्न क्र.

4) उर्वरकों पर व्यय नहीं करना पड़ता है।

~~5) मृदा में लाभ~~

5) मृदा की भौतिक, जैविक व रासायनिक दशा सुधरती हैं।

6) मृदा की जलधारण क्षमता में वृद्धि होती हैं।

प्रश्न क्र. (16) का उत्तर 'अथवा'

हरियाली की विशेषताएँ निम्न हैं :-

1) हरियाली आरामदायक एवं सुन्दर होती हैं।

2) यह घूमने-फिरने में अच्छी व इसमें नंगे पैर ~~घूम~~ चलने में चुभन नहीं होती हैं।

3) हरियाली कीट, बीमारी व खरपतवार रहित होती हैं।

4) हरियाली पूरे वर्ष घनी व हरी होती हैं।

5) हरियाली में छायादार वृक्ष व छाया प्रायः पूरे दिन नहीं होती है।

6) हरियाली ~~में~~ तनाव व अवसाद दूर करने वाली होती हैं।

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (17) का उत्तर

आम की खेती

(A) वानस्पतिक नाम :- मेन्जीफेरा इण्डिका

कुल :- एनाकार्डिएसी

(B) उन्नत किस्में :- (1) दशहरी (6) महमूद बहार
(2) नीलम (7) अर्का अनमोल
(3) अल्फांजो (8) मल्लिका
(4) रत्ना (9) तोतापरी
(5) चौसा (10) मंजिरा

(C) कीट :-

मिली बग :- यह रस चूसती हैं। इसके नियंत्रण के लिए दिसम्बर-जनवरी में ग्रीस बैंडिंग की पट्टी तनों पर लगा देते हैं, जिससे यह पेड़ पर चढ़ नहीं पाती हैं।

रोग :-

ब्लैक टीप :- इससे फलों की नीचली सतह काली होकर मुलायम हो जाती हैं एवं बाद में सख्त हो जाती हैं।

इसके नियंत्रण के लिए ईंट के भट्टों को आम के पेड़ से 1.5 km की दूरी पर लगाना चाहिए।

MPBSE

MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOAR

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (18) का उत्तर

'अथवा'

इनार्चिंग एवं ग्राफ्टिंग में अन्तर निम्न हैं :-

क्र.	इनार्चिंग	ग्राफ्टिंग
(1)	इसमें शाखा (Scion) को पितृवृक्ष से अलग नहीं करके लगाते हैं।	इसमें शाखा (Scion) को पितृवृक्ष से अलग करके लगाया जाता हैं।
(2)	इसमें मूलवृन्त को शाखा (Scion) के पास ले जाते हैं।	इसमें शाखा (Scion) को मूलवृन्त के पास लाते हैं।
(3)	इसमें मूलवृन्त एवं सांकुर डाली (Scion) दोनों के मध्य में तेज चाकू से लम्बा कटान लगाते हैं।	इसमें सांकुर डाली (Scion) के नीचे एवं मूलवृन्त के ऊपर कटान लगाते हैं।
(4)	इसमें सफलता अधिक मिलती हैं।	इसमें सफलता कम मिलती हैं।
(5)	यह अटेच्ड विधि के अन्तर्गत आता हैं।	यह डिटेच्ड विधि के अन्तर्गत आता हैं।

MPBSE

DESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. (19) का उत्तर

धान की खेती

(A) वानस्पतिक नाम — ओराइजा सटाइवा

कुल — ग्रैमिनी

(B) उन्नत किस्में :— (1) जया
(2) नागिना - 22
(3) साकेत - 4
(4) पूसा बासमती - 1
(5) जागृति

(C) रोग :—

(1) धान का खैरा रोग :— यह जिंक की कमी से होता है। इसमे पत्तियाँ पीली पड़कर बाद में सूख जाती हैं व भूरे रंग की हो जाती हैं।
इसके लिए 20-25 kg. ~~जिंक~~ जिंक सल्फेट प्रति हैक्टेयर देना चाहिए।

(2) धान का झोंका :— यह भी धान का एक रोग है। इसके लिए हिनोसान 0.1% का घोल देना उपयुक्त है।

(D) कीट :— (1) गन्धी बग :— इसके निवारण के लिए 10%

MPBSE

मध्यप्रदेश
MADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

B.H.C २०-२५ kg. प्रति हेक्टेयर ~~के~~ देना चाहिए ।

(2) तना भेदक :- यह तने के अन्दर घुसकर फसल को नुकसान पहुँचाता है ।
इसके लिए 10 न. थिमेट 10 kg. प्रति हेक्टेयर भूमि में डालना चाहिए ।

(E) उपज :-
उन्नतशील किस्मों से 50-75 क्विंटल/हेक्टेयर व देशी किस्मो से २०-२५ क्विंटल प्रति हेक्टेयर प्राप्त होता है ।

प्रश्न क्र. (२०) का उत्तर

अच्छी जैली के गुण निम्नलिखित हैं :-

1) अच्छी जैली पारदर्शक व मुलायम होनी चाहिए ।

२) वह जिस बर्तन में रखी जाए, उसी का आकार ग्रहण कर लेती हो ।

(3) चाकू से आसानी से कट सकती हो ।

4) हिलाने पर काँपती रहना चाहिए ।

5) जिस फल से बनायी गयी हो ~~उसी~~ उसकी सुगंध एवं स्वाद आना चाहिए ।

M
P
B
S
E

प्रश्न क्र.

6) बर्तन को उलटने पर पानी के समान न बहती हो।

7) जैली में शर्करा 65-68% होनी चाहिए।

प्रश्न क्र. (14) का उत्तर 'अथवा'

फॉस्फोरस की कमी के तीन लक्षण निम्न हैं :-

1) पौधें में रोग अधिक लगते हैं।

2) जड़ों का विकास नहीं हो पाता हैं।

3) पौधें देर से पकते हैं।

4) पौधों की वृद्धि व विकास नहीं हो पाता हैं।